भूमिका

हिंदी उपन्यास लेखिकाओं में अलका सरावगी का विशिष्ट स्थान है। वे एक संघर्षशील तथा प्रतिभावान कथाकार हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिक जीवन से जुड़ी समस्याओं एवं विषमताओं को चित्रित किया है। उन्होंने अपने आस-पास के घटित प्रसंगों को भी अपने साहित्य में स्थान दिया है। उनके साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों का यथार्थ रूप प्रस्तुत है।

'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' अलका सरावगी का महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें विभाजन के कारण हुए विस्थापन की त्रासदी को गहरे से अभिव्यक्त किया है। अपने शोध विषय की विवेचना के लिए मैंने इसे तीन अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय '**भारतीय उपमहाद्वीप: विभाजन और विस्थापन'** महाद्वीप की उत्पत्ति, एशिया महाद्वीप, भारतीय उपमहाद्वीप से संबंधित है। इसके अंतर्गत आधुनिक भारत का संक्षिप्त इतिहास, भारत-पाकिस्तान विभाजन, पूर्वी पाकिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान विभाजन और बांग्लादेश की उदय संबंधी ऐतिहासिक घटनाओं को उजागर करने का प्रयास किया गया, इन अवधारणाओं के साथ ही वर्तमान दृष्टिकोण की प्रस्तुति के अतिरिक्त विभाजन के उपरान्त विस्थापन की मूल समस्या व उसके कारण भी बताए गए हैं।

द्वितीय अध्याय में '**अलका सरावगी के जीवन और सृजन**' अलका सरावगी के जन्म, इनके पारिवारिक माहौल, व्यक्तित्व, माता-पिता, शिक्षा, वैवाहिक, साहित्य सृजन एवं सम्मान आदि के बारे में संक्षेप में बताया गया है।

तृतीय अध्याय '**कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' उपन्यास में विस्थापन** में विस्थापन की त्रासदी की समस्या को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसमें विस्थापित लोगों की पीड़ा और इसके कारणों व प्रभावों का विवेचन किया गया है।

उपसंहार में समस्त अध्यायों के निष्कर्षों का निष्कर्ष समाहित है।

सर्वप्रथम प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पूरा करने के लिए शोध-निर्देशक डॉ. अमित कुमार सर को मैं धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिनके स्नेहिल सहयोग और मार्गदर्शन के बिना यह शोध कार्य पूर्ण होना असंभव था।

शोध कार्य के दौरान हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय सर के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिनसे समय-समय पर शोध से संबंधित पूर्ण सहयोग एवं जानकारी प्राप्त हुई तथा मै डॉ. अरविन्द सिंह तेजावत सर के लिए भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर शोध और कोर्स वर्क की कक्षाओं में मेरा मार्गदर्शन किया।

इसी के साथ मेरे जीवन की निरंतर उन्नति व भलाई चाहने वाले, जिनके योगदान को मैं शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकती, जिन्होंने मुझे सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण निर्माण में मार्गदर्शन दिया तथा हमेशा जीवन में आदर्श रहने वाले सहायक प्रोफेसर डॉ. रवि प्रताप पाण्डेय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना परम सौभाग्य समझती हूँ।

मेरे शुभचिंतक मित्र और सहपाठी विकास भैया और हिमांशु के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया।

माँ- पापा का प्यार कदम-कदम पर मिला है। उनके प्रति शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त नहीं की जा सकती है। अपने ससुराल वालों की आभारी हूँ जिन्होंने मेरा उत्साहवर्द्धन किया। शोध के दौरान विभिन्न

पुस्तकालयों की पुस्तकों का उपयोग मैंने अध्ययन के लिए किया है, उन पुस्तकालयों के कर्मचारियों का सहृदय धन्यवाद, जिन्होंने भरपूर सहयोग दिया।

रूबी पाण्डेय